Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

निराला की कहानियों में स्त्री चेतना

राम किंकर[1]

निराला प्रगतिशील चेतना से युक्त कवि एवं लेखक थे। शोशण एवं अन्याय के विरुद्ध वे जीवन भर लिखते रहे। अतः स्त्री जो शोशण का ही पर्याय थी उसको कैसे नजर अंदाज कर सकते थे। निराला जिस समय लिख रहे थे उस समय रुढ़िवादी परंपरायें एवं कुप्रथायें नैतिकता के नाम पर स्त्रियों के ऊपर तरह–तरह के प्रतिबन्ध लगाते हुए उनके स्वाभाविक विकास को रोके थीं। इससे स्त्रियों का बहुमुखी विकास तो रुका ही था साथ में समाज भी पतन की ओर अग्रसर था। निराला ने एक निबन्ध में लिखा "आज शिक्षित सभी मनुश्य जानते है,कि भारत के अधःपतन का मुख्य कारण नारी जाति का पीछे रह जाना है,वह जीवन–संग्राम में पुरुश का साथ नही दे सकती वह पहले से ही ऐसे निरावलम्ब कर दी जाती है कि उसमें कोई क्रियाशीलता नही रह जाती।"[1]

निराला के प्रगतिशील स्त्री–चेतना सबंधी विचार उनकी कहानियों में भी प्रकट हुए है। स्त्री–चेतना से सम्बन्धित उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं–क्या देखा, पद्मा और लिली, ज्योतिर्मयी,कमला,श्यामा, सखी, प्रेमिका–परिचय, हिरनी, सुकुलकीबीवी, श्रीमती गजानंनशास्त्रिणी, विद्या, जानकी और दो दाने। इन सभी कहानियों में हमकों स्त्रियों के भिन्न–भिन्न रुप मिलते है। इनमें स्त्रियों का शोशण उत्पीड़न व्यक्त होने के साथ–साथ उनकी मुक्ति का रास्ता क्या हो इसके विशय में भी विचार किया गया है। समाधान सही है या गलत इसको लेकर बहस हो सकती है लेकिन जिन समस्यायों का चित्रण स्त्री से सम्बन्धित निराला ने किया है वह नितांत यथार्थवादी है।

'क्या देखा'नामक कहानी में निराला ने वेश्या जीवन की समस्या को चित्रित करते हुये यह दिखाया है उसमें भी निष्छल प्रेम–भावना होती है,वह भी किसी एक पुरुश से प्रेम कर सकती है। इस कहानी का प्रमुख पात्र प्यारे लाल जो एक लेखक है अपने मित्र सुंदर लाल के साथ एक दिन हीराबाई के कोठे पर उसका नृत्य देखने आता है,तभी से वह हीराबाई के बारे में सोचता रहता है "उसका प्रेम सच्चा है या झूठा? उसने कही प्रेम की नकल तो नही की? परंतु क्यों फिर उसने अपने पीछे मर मिटने वालों ....बड़े–बड़े करोड़–पतियों को उस दिन टके सा जवाब दे दिया?.....अगर वेश्या है तो उसी की क्यों न हुई जिसके पास धन है।"[2]

इस कहानी में वेश्या जीवन की समस्या के साथ–साथ उसके उस

[1] काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

समाजिक सोच का भी चित्रण किया गया है जो पूरे जीवन एक स्त्री को झेलना पड़ता हैं। हीरा को मजबूरी में गाने बजाने का काम करना पड़ता है,वैसे वह पवित्र है,लेकिन प्यारे लाल के मन में जो चलता है वह पूरे समाज का प्रतिनिधित्व करता है।

'ज्योतिर्मयी' कहानी में निराला बाल–विधवा की समस्या का चित्रण किया है। ज्योति बाल–विधवा है,जिसने बताया है कि "मै बारह साल की थी,ससुराल भी नही गयी और यह भी नही जानती कि पति कैसे थे? और विधवा हो गयी।"[3] इस कहानी में ज्योति जो प्रश्न उठाती है वह नितांत आधुनिक स्त्री–चेतना से सम्पन्न है।उसके विचार पुरुशवादी मानसिकता से उपजे उस प्रत्येक कुविचार को जो स्त्रियों के शोशण का कारण है, को ठुकराते हैं। विजय जब उसको पतिब्रता धर्म का महत्व समझाते हुए कहता है कि "पतिब्रता पत्नी तमाम जीवन तपस्या करने के पश्चात परलोक में अपने पति से मिलती है।"[4] इसका जवाब देते हुए ज्योति कहती है "अच्छा बतलाइए तो,यदि पहले व्याही स्त्री इसी तरह स्वर्ग में अपने पूज्य–पाद् पति–देवता की प्रतीक्षा करती हो,और पतिदेव क्रमशः दूसरी,तीसरी,चौथी पत्नियों को मार–मारकर प्रतीक्षार्थ स्वर्ग भेजते रहें,तो खुद मरकर किसके पास पहुचेगें।"[5]

'सखी' कहानी में निराला ने इस मान्यता को तोड़ा है कि एक स्त्री दूसरी स्त्री के सुखों से इर्श्या करती है,साथ ही यह स्थपित किया है कि एक स्त्री का त्याग दूसरी स्त्री के विकास में कितना सहायक हो सकता है? ज्योति एवं लीला सहपाठिनी है। ज्योति के विवाह के लिये आई०सी०एस० लड़के का प्रस्ताव आता है,लेकिन ज्योति उससे विवाह न करके लीला के साथ विवाह करने के लिये उस लड़के से प्रार्थना करती है क्योंकि लीला एक गरीब लड़की है और ट्यूशन पढ़ाकर किसी तरह जीवन–यापन करती है।

'दो दाने' गरीबी, भूख, कुपोशण जो आकाल के साथ–साथ सांमतवादी एवं अग्रेंजो की जमींदारी व्यवस्था की देन है,से सम्बन्धित कहानी है। उन्होंने इस कहानी में यह दिखाने का प्रयास किया है कि आकाल से मजबूर होकर स्त्रियाँ अपने परिवार के भरण–पोशण के लिये कैसे वेश्यावृत्ति को अपनाने के लिये मजबूर है? धर्म के ठेकेदार एवं पैसे वाले धनी लोग गिद्धो की तरह गरीब बालिकाओं को अपने हवस का शिकार बना रहे हैं। कमला जो एक विधवा स्त्री है वह सोचती है "अपने परिवार को लेकर वह भी कलकत्ता चली जाए। ..... जिस तरह दूसरी युवतियों ने यौवन बेंचकर अपने भाइयों की परवरिश की है,वह भी करेगी,नही तो अन्न के अभाव में सबके साथ–साथ खुद अपने को भी काल का ग्रास होते देखेगी।"[6]

'पद्मा और लिली' कहानी अन्तर्राजातीय विवाह की समस्या से सम्बन्धित है। पद्मा एवं राजेन्द्र दोनों एक दूसरे को प्यार करते है लेकिन जाति अलग–अलग होने तथा पद्मा के पिता पं०रामेश्वर के कारण विवाह संबन्ध नही हो पाता। जीते जी विवाह रामेश्वर जी ने नही होने दिया और मरते–मरते भी अपना तुगलकी फरमान वाला पत्र पद्मा को थमा जाते है कि "तुम किसी अपर जाति के लड़के से विवाह मत करना। मैने तुम्हारी सभी इचछाएँ पूरी की हैं,पर अभी तक मेरी एक भी इच्छा तुमने पूरी नही की। शायद मेरा शरीर न रहे तुम मेरी सिर्फ एक बात मानकर चलना –राजेन्द्र या

किसी अपर जाति के लड़के से विवाह न करना बस।"[7]

पं०रामेश्वर जी ने मरते दम तक तो अपनी बेटी पद्मा को चैन से जीने नही दिया,मरने के बाद भी अपने अनुसार कार्य होने की वचनवद्धता का भार पद्मा के ऊपर लाद कर चले गये।लेकिन पद्मा ने भी निश्चय किया– "जिस जाति के विचार ने उसके पिता को इतना दुर्बल कर दिया था,उसी जाति की बालिकाओं को अपने ढंग से शिक्षित कर,अपने आदर्श पर लाकर पिता की दुर्बलता से प्रतिशोध लेने का उसने निश्चय किया।"[8] यही निराला की स्त्री चेतना की विशिष्टता है कि वह प्रतिरोध करती है लेकिन सृजनात्मक। ऐसा ही 'कमला' कहानी की कमला भी करती है,अपने पति की बहन का विवाह अपने भाई राज किशोर के साथ करा के।

'सुकुल की बीबी' एक संस्मरणात्मक कहानी है,जिसके एक पात्र के रुप में निराला पूरी कहानी में बने रहते है। धार्मिक–सामाजिक परम्परायें महिलाओं पर जो प्रतिबन्ध लगाये है,उन्हीं का परिणाम है, 'सुकुल की बीबी' कहानी। सुकुल की बीबी की नायिका पुखराज एक जागरुक स्त्री–पात्र है। होगी क्यों नही,क्योंकि वह अपनी माँ के साथ हुए धार्मिक सामाजिक वितण्डावाद को देख चुकी थी और उसका परिणाम भी उसके सामने था।इसी लिये उसे जातीय दंभ से घृणा है। उसके लिये यह मायने नही रखता है कि हिन्दू कौन है? मुस्लिम कौन है? इसलिये जब उसे सुकुल जी से प्रेम हो जाता है तो उसके लिये और सभी चीजे एवं विचार गौंण हो जाते है। सब कुछ छोड़कर सामाजिक परम्पराओं एवं कुप्रथाओं को नजरन्दाज करते हुए वह एक रात सुकुल जी के घर आ जाती है।

विवाह की समस्या आती है तो वह उसका समाधन भी खोज लेती है। हलांकि सुकुल जी निराला के बचपन के मित्र है लेकिन निराला के पास यह समस्या लेकर आने का दायित्व 'पुखराज' का ही था। "हम बड़ी विपत्ति में है। साल भर से छिपे फिरते है। मै बचने के लिये सुकुल से उनके मित्रों का परिचय पूछती रहीं। सिर्फ आपका परिचय मुझे त्राण देने वाला मालूम हुआ।"[9]

सन्दर्भ

1. निराला रचनावली– 6 पृ०सं०– 430
2. सुकुल की बीबी(कहानी संग्रह) पृ०सं०– 60
3. निराला रचनावली– 4 पृ०सं०– 289
4. निराला रचनावली– 4 पृ०सं०– 289
5. निराला रचनावली– 4 पृ०सं०– 289
6. निराला रचनावली– 4 पृ०सं०– 414
7. निराला रचनावली– 4 पृ०सं०– 288
8. निराला रचनावली– 4 पृ०सं०– 288
9. सुकुल की बीबी(कहानी संग्रह) पृ०सं०– 21